पाठ 10

सुभाषचंद्र बोस का पत्र

प्रिय श्री केलकर,

मैं पिछले कुछ महीनों से आपको पत्र लिखने की सोच रहा था जिसका कारण केवल यह रहा है कि आप तक ऐसी जानकारी पहुँचा दूँ जिसमें आपको दिलचस्पी होगी। मैं नहीं जानता कि आपको मालूम है या नहीं कि मैं यहाँ गत जनवरी से कारावास में हूँ। जब बरहमपुर जेल (बंगाल) से मुझे माँडले जेल के लिए स्थानांतरण का आदेश मिला था, तब मुझे यह स्मरण नहीं आया था कि लोकमान्य तिलक ने अपने कारावास काल का अधिकांश भाग माँडले जेल में ही गुजारा था। इस चहारदीवारी में, यहाँ के बहुत ही हतोत्साहित कर देने वाले परिवेश में, स्वर्गीय लोकमान्य ने अपने सुप्रसिद्ध 'गीता भाष्य' ग्रंथ का प्रणयन किया था जिसने मेरी नम्र राय में उन्हें 'शंकर' और 'रामानुज' जैसे प्रकांड भाष्यकारों की श्रेणी में स्थापित कर दिया है।

जेल के जिस वार्ड में लोकमान्य रहते थे वह आज तक सुरक्षित है, यद्यपि उसमें फेरबदल किया गया है और उसे बड़ा बनाया गया है। हमारे अपने जेल के वार्ड की तरह, वह लकड़ी के तख्तों से बना है, जिसमें गर्मी में लू और धूप से, वर्षा में पानी से, शीत ऋतु में सर्दी से तथा सभी ऋतुओं में धूलभरी हवाओं से बचाव नहीं हो पाता। मेरे यहाँ पहुँचने के कुछ ही क्षण बाद, मुझे उस वार्ड का परिचय दिया गया। मुझे यह बात अच्छी नहीं लग रही थी कि मुझे भारत से निष्कासित कर दिया गया था, लेकिन मैंने भगवान को धन्यवाद दिया कि माँडले में अपनी मातृभूमि और स्वदेश से बलात् अनुपस्थिति के बावजूद मुझे पवित्र स्मृतियाँ राहत और प्रेरणा देंगी। अन्य जेलों की तरह यह भी एक ऐसा तीर्थस्थल है, जहाँ भारत का एक महानतम सपूत लगातार छह वर्ष तक रहा था।

हम जानते हैं कि लोकमान्य ने कारावास में छह वर्ष बिताए। लेकिन मुझे विश्वास है कि बहुत कम लोगों को यह पता होगा कि उस अवधि में उन्हें किस हद तक शारीरिक और मानसिक यंत्रणाओं से गुजरना पड़ा था। वे यहाँ एकदम अकेले रहे और उन्हें कोई बौद्धिक स्तर का साथी नहीं मिला। मुझे विश्वास है कि उन्हें किसी अन्य बंदी से मिलने–जुलने नहीं दिया जाता था। उनको सांत्वना देने वाली एकमात्र वस्तु किताबें थीं और वे एक कमरे में एकदम एकाकी रहते थे। यहाँ रहते हुए उन्हें दो या तीन भेंटों से अधिक का मौका नहीं दिया गया और ये भेंट भी पुलिस और जेल अधिकारियों की उपस्थिति में हुई होंगी, जिससे वे कभी भी

खुलकर और हार्दिकता से बात नहीं कर पाए होंगे।

उन तक कोई भी अखबार नहीं पहुँचने दिया जाता था। उनकी जैसी प्रतिष्ठा और स्थिति वाले नेता को बाहरी दुनिया के घटनाचक्रों से एकदम अलग कर देना, एक तरह की यंत्रणा ही है और इस यंत्रणा को जिसने भुगता है, वही जान सकता है। इसके अलावा उनके कारावास की अधिकांश अवधि में देश का राजनैतिक जीवन मंद गति से खिसक रहा था और इस विचार ने उन्हें कोई संतोष नहीं दिया होगा कि जिस उद्देश्य को उन्होंने अपनाया था, वह उनकी अनुपस्थिति में किस गति से आगे बढ़ रहा है।

उनकी शारीरिक यंत्रणा के बारे में जितना ही कम कहा जाए, बेहतर होगा। वे दंड संहिता के अंतर्गत बन्दी थे और इस प्रकार आज के राजबंदियों की अपेक्षा कुछ मायनों में उनकी दिनचर्या कहीं अधिक कठोर रही होगी। इसके अलावा उन्हें मधुमेह की बीमारी थी। जब लोकमान्य यहाँ थे, माँडले का मौसम तब भी प्रायः ऐसा रहा होगा जैसा वह आजकल है और अगर आज नौजवानों को शिकायत है कि वहाँ की जलवायु शिथिल कर देने वाली और मंदाग्नि तथा गठिया को जन्म देने वाली है और धीरे–धीरे वह व्यक्ति की जीवन शक्ति को सोख लेती है, तो लोकमान्य ने, जो वयोवृद्ध थे, कितना कष्ट झेला होगा।

लेकिन इस कारागार की चहारदीवारियों में उन्होंने क्या यातनाएँ सहीं, इसके विषय में लोगों को बहुत कम जानकारी है। कितने लोगों को पता होता है, उन अनेक छोटी–छोटी बातों का, जो किसी बंदी के जीवन में सुइयों की–सी चुभन बन जाती हैं और जीवन को दूभर बना देती हैं। वे गीता की भावना में मग्न रहते थे और शायद इसलिए दुःख और यंत्रणाओं से ऊपर रहते थे। यही कारण है कि उन्होंने उन यंत्रणाओं के बारे में किसी से कभी एक शब्द भी नहीं कहा।

समय–समय पर मैं इस सोच में डूबता रहा हूँ कि कैसे लोकमान्य को अपने बहुमूल्य जीवन के छह लंबे वर्ष इन परिस्थितियों में बिताने के लिए विवश होना पड़ा था। हर बार मैंने अपने आपसे पूछा 'अगर नौजवानों को इतना कष्ट महसूस होता है तो महान् लोकमान्य को अपने समय में कितनी पीड़ा सहनी पड़ी होगी, जिसके विषय में उनके देशवासियों को कुछ भी पता नहीं रहा होगा।' यह विश्व भगवान की कृति है, लेकिन जेलें मानव के कृतित्व की निशानी हैं। उनकी अपनी एक अलग ही दुनिया है और सभ्य समाज ने जिन विचारों और संस्कारों को प्रतिबद्ध होकर स्वीकार किया है, वे जेलों में लागू नहीं होते। अपनी आत्मा के ह्रास के बिना, बंदी जीवन के प्रति अपने आपको अनुकूल बना पाना आसान नहीं है। इसके लिए हमें पिछली आदतें छोड़नी होती हैं और फिर भी स्वास्थ्य और स्फूर्ति बनाए रखनी होती है। सभी तरह के नियमों के आगे नत होना होता है और फिर भी आंतरिक प्रफुल्लता अक्षुण्ण रखनी होती है। केवल लोकमान्य जैसा दार्शनिक

ही, उस यंत्रणा और दासता के बीच मानसिक संतुलन बनाए रख सकता था और गीता भाष्य जैसे विशाल एवं युग निर्माणकारी ग्रंथ का प्रणयन कर सकता था।

मैं जितना ही इस विषय पर चिंतन करता हूँ उतना ही ज्यादा मैं उनके प्रति आदर और श्रद्धा में डूब जाता हूँ। आशा करता हूँ कि मेरे देशवासी लोकमान्य की महत्ता को आँकते हुए इन सभी तथ्यों को भी दृष्टिपथ में रखेंगे। जो महापुरुष मधुमेह से पीड़ित होने के बावजूद इतने सुदीर्घ कारावास को झेलता गया और जिसने उन अंधकारमय दिनों में अपनी मातृभूमि के लिए ऐसी अमूल्य भेंट तैयार की, उसे विश्व के महापुरुषों की श्रेणी में प्रथम पंक्ति में स्थान मिलना चाहिए। लेकिन लोकमान्य ने प्रकृति के जिन अटल नियमों से अपने बंदी जीवन के दौरान टक्कर ली थी, उनको अपना बदला लेना ही था और अगर मैं कहूँ तो मेरा विश्वास है कि लोकमान्य ने जब माँडले को अंतिम नमस्कार किया था तो उनके जीवन के दिन गिने–चुने ही रह गये थे। निस्संदेह यह एक गंभीर दुःख का विषय है कि हम अपने महानतम पुरुषों को इस प्रकार खोते रहे, लेकिन मैं यह भी सोचता हूँ कि क्या वह दुखद दुर्भाग्य किसी–न–किसी प्रकार टाला नहीं जा सकता था।

आदरपूर्वक।

आपका स्नेहभाजन,
सुभाषचंद्र बोस
नेताजी सुभाषचंद्र बोस

शब्दार्थ

प्रणयन	–	रचना	निष्कासित	–	निकाल बाहर करना
स्मृतियाँ	–	यादें	यंत्रणाएँ	–	यातनाएँ / पीड़ा
प्रतिष्ठा	–	साख	दूभर	–	मुश्किल / कठिन
सांत्वना	–	तसल्ली	दासता	–	गुलामी

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. यह पत्र किसने और कहाँ से लिखा है?
2. लोकमान्य तिलक ने कारावास में कितने वर्ष बिताए?
3. सुभाषचंद्र बोस ने श्री केलकर को पत्र क्यों लिखा?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. लोकमान्य तिलक को बीमारी थी–
   (क) मधुमेह की (ख) हृदय की
   (ग) श्वास की (घ) कोई भी नहीं ( )
2. सुभाषचंद्र बोस ने माँडले जेल को तीर्थ स्थल कहा; क्योंकि–
   (क) वहाँ लोग दर्शन–पूजन करने जाते थे
   (ख) वहाँ देश के क्रांतिकारियों को बंदी रखा जाता था
   (ग) वहाँ सुभाषचंद्र बोस को बंदी रखा गया था
   (घ) वहाँ तिलक को छह वर्ष तक बंदी बनाकर रखा गया था ( )

निम्न शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कर लिखिए–

(यातनाएँ, साख, चहारदीवारी, पुलिस)

1. बाजार में अनुराग की बड़ी ..... है।
2. स्वतंत्रता सैनानियों को जेल में कई ..... भोगनी पड़ी।
3. ..... शांति और व्यवस्था बनाने के लिए आवश्यक है।
4. पक्षी भी पिंजरे की ..... में सुखी नहीं रह पाते।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. ''मेरे लिए यह एक तीर्थ स्थल है'' यह वाक्य किसने कहा?
2. वे दंड संहिता के अंतर्गत बंदी थे। यहाँ 'वे' शब्द किनके लिए प्रयुक्त हुआ है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. सुभाषचंद्र बोस को बरहमपुर जेल से कौन–सी जेल में स्थानांतरित किया गया?
2. जेल में लोकमान्य तिलक ने किस ग्रंथ की रचना की? इस ग्रंथ ने तिलक की क्या पहचान बनाई?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. लोकमान्य तिलक द्वारा जेल में की जाने वाली भेंटों के दौरान होने वाली समस्याओं को लिखिए।
2. लोकमान्य तिलक के बलिदान को अपने शब्दों में लिखिए।

भाषा की बात

1. मुझे विश्वास है कि उन्हें किसी अन्य बंदी से नहीं मिलने दिया जाता था। उक्त वाक्य में 'मुझे विश्वास है' प्रधान उप वाक्य है। 'कि उन्हें किसी बंदी से नहीं मिलने दिया जाता था।' से जुड़ा हुआ है। **ऐसे वाक्य जिनमें एक प्रधान उपवाक्य हो तथा अन्य उपवाक्य उस पर आश्रित हो, उसे मिश्र वाक्य कहते हैं।** इसी प्रकार सरल वाक्य में एक उद्देश्य और एक ही विधेय होता है, जैसे– सुभाषचंद्र बोस ने पत्र लिखा।

   संयुक्त वाक्य में दो सरल वाक्यों को 'और', 'या' आदि समुच्चय बोधक अव्ययों से जोड़ दिया जाता है, जैसे – लोकमान्य तिलक ने गीता भाष्य लिखा और जेल में ही रहे।

   पाठ में आए ऐसे सरल, संयुक्त व मिश्र वाक्यों को छाँट कर लिखिए।

2. नीचे लिखे सामासिक पदों का विग्रह करते हुए समास का नाम लिखिए–
अंतरिक्ष यान, स्वतंत्रता प्राप्ति, जल प्रदूषण, जल–जन्तु, मल निकासी, मौसम चक्र।

3. अपने भावों–विचारों के आदान प्रदान करने का सशक्त माध्यम है पत्र लेखन। यह प्राचीनकाल से चला आ रहा स्थायी तरीका है। इसके परिणामस्वरूप हम नेताजी का पत्र आज भी पढ़ पा रहे हैं। आज समय बदल रहा है। इंटरनेट, वाट्सएप, मोबाइल आदि कई माध्यमों से हम अपने विचारों का आदान–प्रदान करते हैं, लेकिन पत्र को नकार नहीं सकते। पत्र मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं–

(क) औपचारिक पत्र – यह पत्र विद्यालयों, कार्यालयों में पदाधिकारियों को औपचारिक विषयों के लिए लिखे जाते हैं।

(ख) अनौपचारिक पत्र – जब हम अपने परिजनों, मित्रों आदि को व्यक्तिगत रूप से संबोधित करते हुए कोई पत्र लिखते हैं, तो वह अनौपचारिक पत्र होता है। प्रस्तुत पाठ इसका उदाहरण है।

आप अपने नगर पालिका अध्यक्ष को पत्र लिखकर सफाई व्यवस्था के बारे में जानकारी दीजिए।

पाठ से आगे

स्वतंत्रता संग्राम में नेताजी सुभाषचंद्र बोस की महती भूमिका रही थी, उनकी जीवनी का अध्ययन कीजिए।

सृजन

1. आपके विद्यालय में कई उत्सव, त्योहार मनाए जाते हैं। किसी एक उत्सव या त्योहार का वर्णन पत्र रूप में लिखकर अपने मित्र को भेजिए।
2. विभिन्न स्वतंत्रता सैनानियों के चित्र एवं जानकारी एकत्र कर 'मेरा संकलन' में संकलित कीजिए।

तब और अब

नीचे लिखे शब्दों के मानक रूप लिखिए–

सुप्रसिद्ध, यद्यपि, उद्देश्य, बौद्धिक

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

"जो राष्ट्र का हित, वही व्यक्ति का हित और जो राष्ट्र का कर्तव्य,
वही व्यक्ति का कर्तव्य – यह भावना जिस दिन प्रत्येक व्यक्ति में जाग्रत हो जाएगी,
वह देश के लिए बड़ा ही सुदिन होगा।"